प्राकृत सूक्ति कोश

फोल्डर नं.	०१६०७०
ग्रन्थ	प्राकृत सूक्ति कोश
सम्पादक	मुनि चन्द्रप्रभसागर
प्रकाशक	जयश्री प्रकाशन – कलकत्ता
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९८५
पृष्ठ	३१८

मुख्य टाईटल
प्रकाशन – स्तुति
स्वकथ्य
विषयानुक्रम
अचौर्य ---------- १
अजीव ----------३
अज्ञान ----------३
अज्ञानी ---------- ४
अद्वेष ----------८
अधर्म ---------- ९
अध्यात्म ---------- १०
अनाग्रह ---------- १०
अनासक्ति ---------- ११
अनित्यता ---------- १५
अनुकम्पा ---------- १६
अनुरुक्त ---------- १७
अन्तरात्मा ----------१८
अपरिग्रह ----------१८
अप्रमाद ---------- २३
अभय ---------- २८
अविनीत ---------- ३०
अशरण ----------३१
असंयम ---------- ३३
अस्पृश्यता ---------- ३४

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहंकार ---------- ३५
अहिंसा ---------- ३६
आचरण---------- ४५
आचार्य ---------- ४७
आज्ञा ---------- ४९
आत्म – दर्शन ---------- ४९
आत्म – प्रशंसा ---------- ५१
आत्म – बोध ---------- ५१
आत्म – विजय ---------- ५२
आत्म – साक्षी ---------- ५४
आत्म – स्वरूप ---------- ५४
आत्मा ---------- ५६
आत्मौपम्यता ---------- ६५
आपत्ति ---------- ६६
आलसी ---------- ६७
आश्रव ---------- ६७
आहार – विचार ---------- ६७
ईन्द्रिय – दमन ---------- ६८
ईन्द्रियाँ ---------- ७०
उत्तराधिकारी ---------- ७१
उदबोधन ---------- ७१
उन्मागी---------- ७६
उपदेश ---------- ७६
उपदेशक ---------- ७७
करुणा ---------- ७७
कर्म ----------७७
कर्मण्यता ----------८१
कर्म – बन्ध ----------८१
कलंकी ---------- ८२
कल्याणकारी ---------- ८२
कवि ---------- ८२
कषाय ---------- ८३
कामना ---------- ८७
काम – भोग ---------- ८८
कामासक्त ---------- ९०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काव्य – कविता ---------- ९३
कुसंग---------- ९४
क्रान्त – वचन ---------- ९६
क्रोध ---------- ९८
क्षमा---------- १००
क्षमापना ---------- १०१
क्षमाशील ---------- १०२
गच्छाधिपति ---------- १०३
गाथा ---------- १०३
गुण – दर्शन ---------- १०४
गुणवती---------- १०५
गुणानुराग---------- १०५
गुणोदय ---------- १०६
गुरु ---------- १०६
गुरुलक्ष्मी ---------- १०८
चतुर्भङ्गी ---------- १०८
चारित्र ----------११३
जिनवचन ---------- ११४
ज्ञान ---------- ११५
ज्ञान – अज्ञानी ---------- १२३
तत्त्व – दर्शन ---------- १२४
तप ----------१२८
तितिक्षा ---------- १३२
त्यागी ---------- १३३
त्रिवेणी ---------- १३४
दया ----------१३४
दान ----------१३५
दारिद्रय ---------- १३८
दुःख ---------- १३९
दुराचार ---------- १४०
दुर्जन ---------- १४२
दुर्जन – प्रशंसा ---------- १४३
धर्म ----------१४३
धर्मकथा ---------- १४९
धर्मकला ---------- १५०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्माराधक ---------- १५०
धर्म – श्रवण ---------- १५०
धैर्यवान ---------- १५२
ध्यान ---------- १५४
नमस्कार – मन्त्र ---------- १५९
निद्रा ---------- १६०
निन्दा ---------- १६१
निरभिमान ---------- १६३
निर्गुण ---------- १६४
निर्मोही ---------- १६४
निर्लोभ ---------- १६५
परानुपजीवी ---------- १६५
परिणाम ---------- १६५
परोपजीवी ---------- १६६
पाप ---------- १६६
पापी ---------- १६७
पुण्य---------- १६८
पुण्य – पाप ---------- १६९
पुरुषार्थ ---------- १७१
पूज्य ---------- १७२
प्रतिक्रमण ---------- १७३
प्राकृत – काव्य ---------- १७४
प्रायश्चित ---------- १७६
प्रेम ----------१७७
बन्धन ---------- १८०
बहिरात्मा ---------- १८०
बिखरे मोती ---------- १८२
बुढापा ---------- १८६
बह्मचर्य ---------- १८७
ब्राह्मण ---------- १९३
भव्यात्मा ---------- १९५
भाग्य ---------- १९५
भाव ---------- १९५
भिक्षु ---------- १९६
भूख ---------- १९७

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोगी – अभोगी ---------- १९८
मङ्गल ---------- १९८
मन ---------- २००
मधपान ---------- २००
मनुष्य ---------- २०१
मनुष्य – जन्म ---------- २०२
मनोभाव (लेश्या) ---------- २०२
मनोविजय ---------- २०५
मनस्वी ---------- २०५
ममत्व ---------- २०६
मांसाहार ---------- २०६
माया ---------- २०६
मित्र ---------- २०७
मिथ्यात्व (अविधा) ---------- २०८
मिथ्यादृष्टि ---------- २२०
मुक्त ---------- २२१
मैत्री ---------- २२२
मोक्ष ---------- २२३
मोक्ष – मार्ग ---------- २२४
मोह ---------- २२८
यतना ---------- २२९
योगी ---------- २३०
राग ---------- २३१
राग – द्वेष ---------- २३१
राजलक्ष्मी ---------- २३४
रात्रि – भोजन ---------- २३४
लगन ---------- २३५
लोभ ---------- २३५
लोभी ---------- २३६
वाग्विवेक ---------- २३७
विधार्जन ---------- २१०
विनय ---------- २१०
विनय – अविनय ---------- २१४
विनीत ---------- २१५
विपर्यास ---------- २१६

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियोग ---------- २१६
विरक्त ---------- २१६
विवेक ---------- २१७
वितराग ---------- २१७
वीर ---------- २१९
वीरता ---------- २१९
वेश ---------- २१९
वेशधारी---------- २४३
वेश्यागमन ---------- २४४
वैयावृत्य (सेवा) ---------- २४५
व्यसन ---------- २४६
शत्रु ---------- २४७
शरण ---------- २४७
शरीर ---------- २४८
शिक्षा ---------- २४८
शिक्षाशील ---------- २४९
शिष्य ---------- २४९
शील ---------- २५०
शौचधर्म ---------- २५१
श्रद्धा ---------- २५२
श्रद्धा ---------- २५२
श्रमण एवं श्रमण – धर्म ---------- २५३
श्रावक – धर्म ---------- २५७
श्रुत – ज्ञान ---------- २५९
संघ ---------- २६०
संयम ---------- २६२
संयमासंयम ---------- २६३
संवर---------- २६३
सज्जन ---------- २६४
सत्य ---------- २६७
सत्यवान---------- २७०
सत्संग ---------- २७०
सदगुण ---------- २७२
सदव्यवहार ---------- २७२
सन्तोष ---------- २७४

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्तोषी---------- २७५
समगुणी ---------- २७५
समत्वयोग ---------- २७६
समाधिमरण ---------- २७९
समाधिस्थ ---------- २०१
सम्मान ---------- २८१
सम्यग्दर्शन ---------- २८२
सम्यकत्व---------- २८६
सरलता ---------- २८७
साधु ---------- २८८
साहसी ---------- २८९
सुख ----------२८९
सेवक ---------- २९०
स्पर्श ---------- २९०
स्वाध्याय ---------- २९१
स्वाभिमानी ---------- २९२
ह्रदय – संवरण ---------- २९२

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org